जागोरी ने मनायो री अपनो दिवस

''अपना दिन हम मनाएं तो बड़ा मज़ा आए
सखियां मिलजुल के गाएं तो बड़ा मज़ा आए''

इस साल आठ मार्च के दिन हमको बहुत मज़ा आया। ढेर सारी औरतें अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने के लिए इकट्ठी हुई थीं। वैसे तो मार्च के पहले सप्ताह में रोज़ कहीं न कहीं औरतें अपना दिवस मना रही थीं। कभी दिल्ली विश्वविद्यालय में, तो कभी बस्तियों में। सात मार्च को बहुत सी संस्थाओं व समूहों ने मिल का जुलूस निकाला था।

फिर आया 8 मार्च। उस दिन जागोरी संस्था ने सारी बहनों को बुलावा भेजा था अपना दिन मनाने के लिए। जगह थी—सरोजिनी नगर बाजार। समय था—शाम साढ़े चार बजे।

खूब औरतें आईं। छोटी-बड़ी, मध्यवर्गीय और बस्तियों की, कुछ खूब पढ़ी-लिखी, कुछ निरक्षर। साझी बात एक थी। सभी औरतें थीं और आठ मार्च उनका अपना दिन था। सच में मेला था बहनों का। इस बार जागोरी ने औरतों के साथ होने वाली यौन हिंसा के खिलाफ आवाज़ उठाने का फैसला किया था। अपना विरोध जतलाने के लिए बहुत सी बहनों ने काले रंग के कपड़े पहन रखे थे।

जागोरी की पुकार थी—

यौन हिंसा पर बात करेंगे

सबका जवाब था—

अब ना चुपचाप रहेंगे

बस, सड़क, दफ्तर, यहां तक कि घर के अंदर भी छोटी लड़कियों से लेकर बूढ़ी औरतों के साथ यौन अत्याचार होते हैं।

हर वक्त वे इस डर के साथ जीती हैं कि कहीं कुछ हो न जाए। घरवाले भी रोक-टोक और बंधन बढ़ाते हैं। समाज उनके चारों ओर लक्ष्मण रेखाएं खींचता है।

दोष किसका है? शिकार का या अपराधी का?

हमें अपनी घूमने-फिरने की आजादी चाहिए। चाहे हम शहर की औरत हों या गांव की। दफ्तर में काम करती हों या खेत में। किसी को हक़ नहीं हमारी मर्जी के बगैर हमें छुए भी। सरकार और कानून की जिम्मेदारी है कि हर इंसान को ऐसी सुरक्षा दिलाए।

गीत और नाटक

सब बहनों ने इकट्ठा होकर गीत गाए, नारे लगाए और पर्चे बांटे।

जागोरी ने औरतों के साथ होने वाली हिंसा और उनकी डर से भरी जिंदगी के बारे में छोटा-सा नाटक दिखलाया। 'सहेली' और 'अलारिपु' नामक संस्थाओं के नाटक भी हुए। अंधेरा पड़े बाद सभी बहनों ने हाथ में जलती हुई मोमबत्तियां और मशालें पकड़ी और निकल पड़ी एक जुलूस की शक्ल में। जोश और उमंग से भरी हुई गीत गाती और नारे लगाती हुईं। यह जुलूस दिल्ली की मुख्य सड़क रिंग रोड़ से गुजर कर मेडिकल इंस्टीट्यूट के चौराहे पर थमा।

सभी बहनों ने एक बड़ा गोल घेरा बनाया। घेरे के बीच में शांति और कमला गीत गा रही थीं, नारे लगा रही थीं। चारों ओर खड़ी औरतें उनके गीतों और नारों को दोहरा रही थीं। कुछ नाच रही थीं, अपनी मशालें लहराती हुईं। रात-दिन बसों, गाड़ियों के भोंपू से गूंजने वाले चौराहे पर आज नारीवादी गीत और नारे गूंज रहे थे।

"तोड़ तोड़ के बंधनों को
देखो बहनें आती हैं
ओ देखो लोगो
देखो बहनें आती हैं
आएंगी जुल्म मिटाएंगी
वो तो नया ज़माना लाएंगी।"

एक समां बंध गया। शायद दिल्ली में रस की ऐसी बरसात पहले कभी नहीं हुई। आते-जाते लोग थम गए। ऐसा लगा एक घंटे के लिए जैसे वक्त भी रुक गया। हर औरत ताक़त और आत्म विश्वास से लबालब भर गई। बहनापे की मीठी सुगंध में डूब गई। उस दिन मिली ताक़त और दोस्ती का खुमार अब तक छाया हुआ है।

—वीणा शिवपुरी